शृंगार निर्णय

ले०-

भिखारीदास

1895

भारत जीवन प्रेस, काशी

श्रीगणेशाय नमः ।

शृङ्गारनिर्णय ।

सवैया ।

मूस मृगेस बली वृष बाहन किङ्कर कीनो करोर तैंतीस को । हाथन में फरसा करबाल त्रिमूल धरे खल खोड़बे खीस को ॥ जक्तगुरु जग को जननी जगदीस भरे सुख देत असीस को । दास प्रणाम करै कर जोरि गणाधिप को गिरिजा को गिरीस को ॥ १ ॥

कवित्त ।

मच्छ ह्वैके बेद काढ्यो कच्छ ह्वै रतन गाढ्यो कोल ह्वै कुगोल रद राख्यो सबिलास है । बावन ह्वै इन्द्र है नृसिंह प्रहलाद राख्यो कीनो ह्वै द्विजैस जाने छिति छत्र नास है ॥ राम ह्वै दसास्य-बंस कान्ह ह्वै संघाख्यो कंस बौध ह्वैके कीनो जिन स्रावक प्रकास है । कलकी ह्वै राखि रहैं

हिन्दूपति पति देत म्लेच्छ हति मोच्छगति दास
ताको दास है ॥ २ ॥

दोहा ।

श्रीहिन्दूपति-रीझि हित समुझि ग्रन्थ प्राचीन ।
दास कियो शृङ्गार को निरनय सुनो प्रवीन॥३॥
सम्बत् विक्रम भूप को अट्ठारह से सात ।
माधव सुदि तेरस गुरौ अरवर थल विख्यात॥४॥
बन्दौं सुकविन के चरन अरु सुकविन के ग्रन्थ ।
जातें कछु हौंहूं लह्यौ कविताई को पन्थ ॥ ५ ॥
जिहि कहियत शृङ्गाररस ताको जुगल बिभाव ।
आलम्बन इक दूसरौ उद्दीपन कविराव ॥ ६ ॥
बरनत नायक नायिका आलम्बन के काज ।
उद्दीपन सखि दूतिका सुख-समयो सुखसाज ॥

नायकलच्छण ।

तरुन सुघर सुन्दर सुचित नायक सुहृद बखानि ।
भेद एक साधारनै पति उपपति पुनि जानि ॥

साधारण नायक यथा — कवित्त ।

सुख सुखकन्द लखि लाजै दास चन्द चोप

चोप सो चुभत नैन गोप-तनुजान की । तैसो सब सुरभित बसन हिये की माल कानन की कुण्डल बिजायठ भुजान की॥ नासा लखि सुक-तुण्ड नाभी पै सरस कुण्ड रद है दुरद-सुण्ड देखत भुजान की। नल को न लीजै नाम कामहू को कहा काम आगे सुखधाम स्यामसुन्दर सुजान की ॥ ८ ॥

पति लक्षण — दोहा ।

निजब्याही तिय को रसिक पति ताकों पहिचान।
आसिक और तियान को उपपति ताकों जान॥

पति यथा — सवैया ।

छाड़्यो सभा निसिबासर की मोजरे लगे पावन लाग प्रभातैं । हासबिलास तज्यो तिन सों जिन सों रह्यो है हँसि बोलि सदा तैं ॥ दास भोराई-भरी है वही पै प्रयोग प्रबीनो गनी गई यातैं । आई नई दुलही जब तें तब तें लई लाल नई नई बातैं ॥ ११ ॥

उपपति यथा ।

अलकावलि ब्यालबिसाल घिरे जहँ ज्वाल

जवाहिर जोति गहै। चमकै बरुनी बरछी भुव खञ्जर कैवर तीच्छ कटाछम है॥ बसि मैन महा ठग ठोढ़ी की गाड़ में हास कै पास पसारे रहै। मन मेरे कि दास ढिठाई लखो तहँ पैठि मिठाई लियायो चहै॥ १२॥

नायक भेद—दोहा।

अनुकूलो दच्छिन सठो धृष्टिति चोराचार।
इक नारी सों प्रेम जिहि सो अनुकूल बिचार॥

पति अनुकूल यथा—सवैया।

सम्भु सों क्यों कहिये जिहि ब्याही है पारबती औ सती तिय दोऊ। राम समान कह्यो चहै जीय पै माया की सीय लिये रहै सोऊ॥ दास जू जौ यहि औसर होवतीं तेरोई नाह सराहतीं वोऊ। नारि पतीव्रत हैं बहुतै पतिनीव्रत नायक और न कोऊ॥ १४॥

उपपति अनुकूल यथा।

तो बिन राग औ रङ्ग वृथा तुव अंग अनङ्ग की फौजन की सौं। मुसक्यान सुधारस भौजन

की तुव आनन आनँद खानिनि की सौं॥ दास के प्राण की पाहरू तू यह तेरे करेरे उरोजन की सौं। तो बिन जीबो न जीबो प्रिया मुहिँ तेरई नैन सरोजन की सौं॥ १५॥

दक्षिण लक्षण—दोहा।

बहु नारिन को रसिक पै सब पै प्रीति समान।
बचनक्रिया मैं अति चतुर दच्छिनलच्छन जान॥

यथा सवैया।

सीलभरी अँखियान समान चितै सब को दुचिताइ को घायक। दास जू भूषन बास कियो सबही के मनोरथ पूजिबे लायक॥ एकहिं भाँति सदा सब सौं रतिरङ्ग अनङ्गकला सुखदायक। मैं बलि द्वारिकानाथ की जो इन सौरह सै नवलान को नायक॥ १७॥

दक्षिण उपपति यथा।

आज बनै तुलसीवन में रमि रास मनोहर नन्दकिसोर। चारिहु पास हैं गोपबधू भनि दास हिये मैं हुलास न थोर॥ कौल उरोजवतीन को आनन मोहन नैन भ्रमै जिमि भोर। मोहन

आननचन्द लखै बनितान के लोचन चाह चकोर ॥ १८ ॥

बचनचतुर यथा ।

भौन अँधेरेहू चाहि अँधेरे चमेली के कुञ्ज के पुञ्ज बने हैं । बोलत मोर करै पिक सोर जहाँ तहँ गुञ्जत भौंर घने हैं ॥ दास रच्यो अपनेही बिलासको मैन जू हाथन सो अपने हैं । कूल कलिन्दजा के सुखमूल लतान के बृन्द बितान तने हैं ॥ १९ ॥

क्रियाचतुर यथा ।

जित न्हानथली निज राधे करी तित कान्ह कियो अपनो खरको । जित पूजा करै नित गौरि की वै तित जाय ये ध्यान धरैं हर को ॥ इमि भेद न दास जू जानै कछू ब्रज ऐसो बसै बुधि को बर को । दधिबेचन जैबो जितै उनको एई गाहक हैं तितके घर को ॥ २० ॥

सठ लक्षण—दोहा ।

निज मुख चतुराई करै सठता बिरचै आह ।
व्यभिचारी कपटी महा नायक सठ पहचान॥२१॥

सठ पति यथा—सवैया।

वा दिन की करनी उनकी सब भाँतिन कै ब्रज में रही छाय कै। दास जू कासों कहा कहिये रहिये नित लाजन सीस नवाय कै॥ मेरे चलावतहीं चरचा मुकरै सखि सौंहैं बड़ेन की खाय कै। तू निज ओर सों नन्दकिशोर सों क्यों न कछू कहती समुझाय कै॥ २२॥

सठ उपपति यथा।

मिलिबे को करार करौ हम सों मिलि औरन सों नित आवत हौ। इन बातन हौंहीं गई करती तुम दास जू धोखो न लावत हौ॥ नटनागर हौ जू सही सबही अँगुरी के इसारे नचावत हौ। पै दई हमहूं बिधि थोरी घनी बुधि काहें को बातें बनावत हौ॥ २३॥

धृष्ट लक्षण—दोहा।

लाजरु गारी मार की छोड़ दई सब त्रास।
देख्यो दोष न मानई नायक धृष्ट प्रकास॥२४॥

पति धृष्ट यथा—सवैया।

उपरैनी धरे सिर भावती की प्रति रोम प-

सीनन यों निकसै। मुसुकात इतै पर दास सबै गुरुलोगनि के ढिग ह्वै निकसै॥ गुनहीन हरा उर में उपज्यो तिहि बीच नखच्छत क्वै निकसै। गृह आवत हैं ब्रजराज अली तन लाज को लेस न ध्वै निकसै॥ २५॥

उपपति धृष्ट यथा।

यह रीति न जानो इतो तब जानी जू आज लों प्रीति गई निबही। नहि जायगी मोसों सही उतही करो जाय के ऐसी ढिठाई सही॥ पहिचान्यो भले बिधि दास तुमैं अबला-जन को अब लाज नहीं। मनभावही को न करी डर जो मनभाई की दौर कै बाँह गही॥ २६॥

इति नायक।

अथ नायिकलच्छण—दोहा।

पहिले आतम धर्म्म तें त्रिबिधि नायिका जानि।
साधारन वनिता अपर सुकिया परकीयानि॥

साधारण नायिका लच्छण।

जामे स्वकिया परकिया रीति न जानो जाय।
सो साधारण नायिका बरनत सब कविराय॥

जुवा सुन्दरी गुनभरी तीन नायिका लेखि ।
सोभा कान्ति सुदीप्तियुत नखसिख प्रभा विसेखि॥

सोभा यथा—कवित्त ।

दास आसपास आली ढारती चँवर भावै लोभी ह्वै भवँर अरविन्द से बदन मैं । केती स-हबासिनी सुबासिनी खवासिनीहू नैन जोहैं बैठी बड़ी आपने हदन मैं॥ सची सुन्दरी है रतिरंभा औ घृताची पै न ऐसी रुचिराची कहूं काहू के कदन मैं। पूरी चितचायनि गोबिन्द सुखदा-इनि श्रीराधा ठकुराइन बिराजति सदन मै॥

कान्ति—यथा ।

पहिरत रावरे धरत यह लाल सारी जोति जरतारीहूं से अधिक सोहाई है । नाक मोती निन्दत पदमराग रंगनि को खुलित ललित मिलि अधर ललाई है ॥ औरे दास भूषन स-जत निज सोभा हित भामिनी तू भूषननि सोभा सरसाई है । लागत बिमल गात रूपन के आ-भरन बढ़ि जात रूप जातरूप तें सवाई है॥

दीप्ति वर्णन।

आरसी को आंगन मोहायो कवि छायो न-
हरनि में भरायो जल उज्जल सुमन-माल। चां-
दनो विचित्र लखि चांदनी बिछौना पर दूरि
कै चँदोअन को बिलसै अकेलो लाल॥ दास
आसपास बहु भाँतिन बिराजैं धरे पन्ना पाख-
राज मोती मानिक पदिक लाल। चद प्रति-
बिम्ब ते न न्यारो होत मुख औ न तारे प्रतिबिम्ब
ते न न्यारो होत नख जाल॥ ३२॥

पग वर्णन।

पाँखुरी पदुम कैसी आँगुरी ललित तैसी कि-
रनैं पदुमराग-निन्दक नखन में। तरवा मनो-
हर सी एड़ी मृदु कौहर सो सोहर ललाई को न
लेहै लालगन में॥ अतन तें आंक रखि अतन
बरषि देत भानु कैसो भाव देख्यो तेरे चरनन
में। आंक रखि लीन्हा है सोहाग सब सौतिन
को दीनो है बरषि अनुराग पिय मन मे॥३३॥

जानु वर्णन।

करभ वतावै ते करभही की सोभा हित

गजसुंड गावै तो गजन की बड़ाई को । ऐरी प्रानप्यारी तेरे जानु के सुजान बिधि ओप दीनो आपनो तमाम सुघराई को ॥ दास कहै रंभा सुरनायक-सदनवारी नेकहू न तुलौ एको अंग की निकाई को । रंभा बाग कोने की जो वाके ढिग सोने की ह्वै सीम भारि आवै तौ न पावै समताई को ॥ ३४ ॥

नितम्ब वर्णन ।

तो तन मनोजही की फौज है सरोजमुखी हाव भाव सायकै रहे हैं सरसाय कै । तापर सलोनो तेरे बस हैं गोबिन्द प्यारो मैनहू के बस भयो तेरे ढिग जाय कै ॥ तिनहू गोबिन्द लै सुदरसन चक्र एकै कीन्हों बस भुवन चतुर्दस ब-नाय कै । काहे ना जगत जीतिवे को मन राखै मन दुर्लभ दरस है नितम्ब चक्र पाय कै ॥३५॥

कटि वर्णन ।

सिंहिनी औ मृगिनी को ता ढिग जिकिर कहा बारहू मुरारिहू तें खीनी चित धरि तू ।

टूरही तें नेसुक नजर-भार पावतहीं लचकि लचकि जात जी मे ज्ञान करि तू ॥ तेरो परिमान परमान के प्रमान है पै दास कहै गरुआई आपनी सँभरि तू । तूतो मनु है रे वह निपटही तनु है रे लंक पर दौरत कलंक सो तो डरि तू ॥३६॥

उदर वर्णन ।

कैसो करिये अति अदभुत निकाई भरी क्षामोदरी पातरी उदर तेरो पान सो । सकल सुदेस अंग बिहरि थकित ह्वै के कीवे को मिलान मेरे मन के मकान सो ॥ उरज सुमेरु आगे त्रिवली बिमल सीढ़ी सोभा सरनाभि सुभ तीरथ समान सो । हारन की भांति आवा-गौन की बंधी है पांति मुकुत सुमनवृन्द करत जहान सो ॥७३॥

रोमावली वर्णन—सवैया ।

बैठो मलीन अली अवली कि सरोज कलीन सो ह्वै बिफली है । संभु लगी बिकुरीहो चली किधौं नागलली अनुराग-रली है ॥ तेरी अली यह रोमावली के सिँगारलता फलबेलि फली

है। नाभिथली तें जुरे फल लै कि भली रस-राज नली उछली है ॥ ३८ ॥

कुच वर्णन।

गाढ़े गड़्यो मन मेरो निहारि कै कामिनि तेरे दोऊ कुच गाढ़े। दास मनोज मनो जग जीति कै खास खजाने के कुंभ है काढ़े ॥ चक्रवती है एकत्रित मानो मजोम कै जीम दुई उर बाढ़े। गुच्छ कै गुम्बज कै गिरि कै गिरिराज कै गर्व गिरावत ठाढ़े ॥ ३९ ॥

भुज वर्णन।

खूब सुहाय खराद चढ़ायसी भावती तेरी भुजा छबि जाल हैं। सोभा सरोवर तू है सही तहँ दास कहै ये सकंज मृनाल हैं॥ कंचन की लतिका तू बनी दुहुं छाये बिचित्र सपल्लव डाल हैं। अंग में तेरे अनंग बसै ठग ताहि के पास की फांसी बिसाल हैं॥ ४० ॥

कर वर्णन।

पच महारुन एक मिलाय गुलाब कली

तरुनी रँग दीने । पांखुरी पंच को कंज को भानु में बान मनोज के श्रोणित-भीने ॥ पंच दसानि को दीपक सो कर कामिन को लखि दास प्रबीने । लाल की बेंदुली लालरि को लरिया युत आय निकावरि कीने ॥ ४१ ॥

पीठ वर्णन ।

मंगल मूरति कंचनपत्र कै मैनरच्यो मन भावत नीठि है । काटि किधौं कदली दल गाफ को दीना जमाय निहारि अपीठि है ॥ दास प्रदीप सिखा उलटी कै पतंगमई अवलोकत दीठि है । कंध ते चाकरी पातरी लंक सो सोभित कैधों सलोनी की पीठ है ॥ ४२ ॥

कंठ वर्णन ।

कंबु कपोतन की सरि भाषत दास तिन्हैं यह रीति न पाई । या उपमा का यही है यही है यही है बिरंचि त्रिरेख खचाई ॥ कांचन पंचलरा गजमोती हरामनि लाल की माल मोहाई । कै तिय तेरे गरे में परी तिहुंलोक की आनि कै सुन्दरताई ॥ ४३ ॥

ठोढ़ी वर्णन ।

छाक्यो महा मकरन्द मलिन्द रह्यो किधौं मंजुल कंज-किनारे । चंद में राहु को दंत लग्यो कै गिरी ससि भाग सोहाग लिखारे ॥ दास रसीली की ठोढ़ी छबीली की लीलीं को बिन्दु पै जाइये बारे । मित्र की दीठि गड़ी किधौं चित्त को चोर गिरयो छबिताल गड़ारे ॥

अधर वर्णन – कबित्त ।

एरी पिकबैनी दास पटतर हेरे जब जब तेरे सुंदर अधर मधुरारे को । दाख दुरिजाय मिसिरीओ मुरिजाय कैसे कंद कुरि जाय सुधा सटक्यो सवारे को ॥ ललित ललाई के समान अनुमाने रंग बिम्बाफल बंधुजीव बिद्रुम बिचारे को । तातें इन नामनि को पहिलोई बर्ण कहैं मुख मूँदि मूँदि जात बरननवारे को ॥

दसन वर्णन ।

बिधु सो निकासि नीको बिधि सो तरासि लाला सैकरि सवार्यो बिधि वत्तमो बनाय है । हासही में दास उजराई को प्रकास होत च-

धर ललाई धरे रहत सुबाय है ॥ हीरा की हि-
रानी उड़गन की उड़ानी अरु मुकुतन हूं को
छबि दीनी मुकताय है । प्यारी तेरे दन्तन अ-
नारदाने कहि कहि दाना ह्वै के कबि क्यों
अनारी कहवाय है ॥ ४६ ॥

हास बर्णन ।

दास मुखचन्द्र की सी चन्द्रिका बिमल चारु
चन्द्रमा की चन्द्रिका लगत जामें मैली सी ।
बानी को कपूर धूर ओढ़नी सी फहराति बात
बस आवत कपूर धूर फैली सी ॥ बिज्जु सी च-
मकि महताब सी दमकि उठै उमगति हिय के
हरख की उजेली सी । हांसी हेमबरनी की
फांसी सी लगत ही में सांवरे दृगन आगे फूलत
चमेली सी ॥ ४७ ॥

बानी वर्णन सवैया ।

देव मुनीन को चित-रमावन पावन देव-
धुनी-जल जानो । दास सुने जिहि जाख मयूख
पियूख की भूख भगी पहिचानो ॥ कोकिल को

किल कीर कपोतन को कल बोलनिखंडनी मानो। बाल प्रबीनी की बानी को बानक बानी दियो तजि बीन को बानो ॥ ४८ ॥

कपोल बर्णन कबित्त।

जहां यह श्यामता को अंक है मयंक में तहांई स्वच्छ छबिहि मुछानि बिधि लीन्हो है। तामें मुखजोग सबिसेख बिलगाय अवसेख सों बिसेख सर्वाङ्ग रचि दीन्हो है ॥ आनन को चारुतामें चारुहूं तें चारु चुनि ऊपरही राख्यो बिधि चातुरी सो चीन्हो है। तासों यह अमल अमोल सुभ गोल डोल लोलनैनी कोमल कपोल तेरो कीन्हो है ॥ ४९ ॥

श्रवणवर्णन सवैया।

दास मनोहर आनन बाल को दीपति जाकी दिपै सब दीपै। श्रौन सोहाये बिराजि रहै मुकताहल-संजुत ताहि समीपै ॥ सारी महीन सो लीन बिलोकि बिचारत हैं कबि के अवनीपै। सोदर जानि ससीही मिली सुत संग लिये मनो सिन्धु मै सीपै ॥ ५० ॥

नासिका वर्णन कवित्त।

चारु मुखचंद को चढ़ायो बिधि किंसुक के सुमन यो बिम्बाफल लालच उमंग है। नेह उपजावन अतूल तिलफूल कैंधो पानिप सरोवर की उरमी उतंग है॥ दास मनमथ-साहि कंचन सुराही मुख बासजुत पालकी के पाल सुभ रंग है। एकही में तीनौ पुर ईस को है अंस कैधों नाक नवला को सुरधाम सुर संग है॥ ५१॥

नैन वर्णन सवैया।

कंज सकोचि गड़े रहैं कीच में मीनन बोरि दियो दह नीरनि। दास कहै मृगहूं को उदास कै बास दियो है अरण्य गँभीरनि॥ आपुस में उपमा उपमेय ह्वै नैन ये निन्दत हैं कबि धीरनि। खंजन हूं को उड़ाय दियो हलके करि दीने अनंग के तीरनि॥ ५२॥

भृकुटी वर्णन।

भावती-भौंह के भेदनि दास भले यह भारतो मासो गई कहि। कीन्हो चह्या निकलंक

मयंक जबै करतार बिचार हिये गहि ॥ मेटत मेटत है धनुषाकृति मेचकताई की रेख गई रहि। फेर न मेटि सक्यो सविता कर राखि लियो अतिही फविता लहि ॥ ५३ ॥

भ्रूभाव चितवनि वर्णन कवित्त।

जै बिन पनच बिन कर को कसीस बिन चलत हमारे यह जिनको प्रमान है। आखिन अड़त आय उरमें गड़त धाय परत न देखे पीर करत अमान है ॥ बंक अवलोकनि को बान औरई बिधान कज्जलकलित जामें जहर समान है। तातें बरबस बेधै मेरे चित चंचल को भामिनी ये भौंहैं कैसी कहर कमान है ॥५४॥

भाल वर्णन सवैया।

बैठक है मन-भूप को न्यारो कि प्यारो अखारो मनोज बली को। सोभन की रँगभूमि सुभाव बनाव बन्यो कि सोहागथली को ॥ दास बिसेख कै तंत्रिका यंत्र को जातें भयो बस भाइ छली को। भाग लसै हिमभानु को चारु लिलार किधौं वृषभानलली को ॥ ५५ ॥

मुखमंडल वर्णन कवित्त ।

आवै जित पानिप समूह सरसात नित मानै जलजात सुतौ न्यायही कुमति होइ । दास जा दरप को दरप कंदरप को है दरपन सम ठानै कैसे बात सति होइ ॥ और अबलानन में राधिका को आनन बरोबरी को बल कहै कवि कूर अति होइ । पैये निस बासर कलं-कित न अंक ताहि बरनै मयंक कविताई को अपति होइ ॥ ५६ ॥

माँग वर्णन सवैया ।

चीकनी चारु सनेहसनी चिलकै दुति मेचकताई अपार सो । जीति लयो मखतूल के तार तमोतम तार दुरेफ कुमार सो ॥ पाटी दुहूं बिच मांग की लाली बिराजि रही यों प्रभा बि-सतार सो । मानो सिंगार की पाटी मनोभव सींचत है अनुराग की धार सों ॥ ५७ ॥

केस वर्णन कवित्त ।

घनस्याम मनभाये मोर के पखा सोहाये रस बरसाये घन-सोभा उमहत है । मन चक-

झाये मखतूल तार जानियत मोह उपजाये
अहिछौने से कहत है॥ दास यातें केस के स-
रिस हैं मलिन्दवृन्द मुख अरविन्द पर परेई
रहत है। याही याहा विधि उपमान ये भये हैं
जब और कहा श्यामता है समता लहत है॥

बेनी वर्णन।

वह मोच्छदेनी पातकिन को खिनक बीच
साधु-मन बाधे यह कौन धौं बडाई है। मरे
मरे लोगनि अमर करै वह यह जीवत को मार
करै गुन की कसाई है॥ सिरतें चरन लौं मैं
नीकै कै निहाख्यो दास बेनी कै त्रिधारा यामे
एक ना लखाई है। बिसकी सवारी भयकारी
कारी सांपिन सी एरी पिकबेनी यह बेनी क्यों
कहाई है॥ ५९॥

अलक पै अलिवृन्द भाल पै अरधचंद भूपै
धनु नैनन पै वारों कंजदल मैं। नासा कीर
मुकुर कपोलबिम्ब अधरन दाख्यो वाख्यो दसिनि
ठोढ़ी अम्बफल मैं॥ कंबु कंठ भुजन मृनाल

दास कुच कोक ह्वनी तरंग वारों भौंर नाभि-थल मैं। अचल नितम्बन पै जंघन कदलिखंभ बाल पगतल वारों लाल मखमल मैं ॥ ६० ॥

संपूर्ण मूर्ति वर्णन सवैया।

दास लला नवलाछबि देखि कै मो मति है उपमान तलासी। चंपकमाल सी हेमलता सी कि होय जवाहिर की लवलासी ॥ दीपसिखा सी मसालप्रभा सी कहौं चपला सी की चंद कला सी। जोति सी चित्र की पूतरी काढ़ी कि ठाढ़ी मनोजहि कि अबाला सी ॥ ६१ ॥

इति साधारण नायिका।

स्वकीया लक्षण दोहा।

कुलजाता कुलभामिनी स्वकिया लच्छन चारु।
पतिब्रता उद्दारि जो माधुर्जालंकारु ॥ ६२ ॥
श्री भामिन कै भौन जो भोगभामिनी और।
तिनहूं को स्वकियाहु मै गनैं सुकबि सिरमौर ॥

पतिब्रता यथा सवैया।

पान भी खान तें पी को सुखी लखै आप

तबै कछू पीवति खाति है। दास जू केलि थलो-हि में ढीठो बिलोकति बोलति औ मुसकाति है॥ सूने न खोलति बैनी सुनैनी ब्रती ह्वै बितावति बासर राति है। आली वो जाने न ये बतियां यों तिया पियप्रेम निबाहति जाति है॥

उदारिज यथा।

हेम को कंकन हीरा को हार छोड़ावती दै दै सोहाग असीसनि। दास लला को निछावरि बोलि जु मागै सु पाय रहै बिस बीसनि॥ द्वार में पीतम जौलों रहै सनमानत देसनि की अवनीसनि। भीतरी ऐबो सुनाय जनी तबलों लहि जाती घनी बकसीसनि॥ ६५॥

माधुर्ज यथा।

प्रीतम प्रीति मई उनमानै परोसिन जानै सुनी तिहि सो ठई। लाज सनी है बड़ी निभनी बर नारिन में सिरताज गनी गई॥ राधिका को ब्रज की जुबती कहैं याहि सोहाग समूह दई दई। सौतिं हलाहल सौति कहै औ सखी कहै सुंदरि सील सुधामई॥ ६६॥

जेष्ठा कनिष्ठा भेद दोहा ।

इक अनुकूलहि दच्छ सठ धृष्ट तिअनि अँग बाम।
प्यारी जेष्ठा प्यार बिन कहै कनिष्ठा बाम ॥६७॥

साधारण जेष्ठा यथा सवैया ।

प्रफुलित निर्मल दीपतिवंत तू आनन द्योस निस्यो इक टेक । प्रभा रद होत है सारद कंज कहा कहियै तहँ दास विवेक ॥ चितै तिय तौ-कुच कुंभ के बीच नखच्छत चन्दकला सुभ एक । भये इत सौतिन के मुख सारदी रैन के पूरन चंद अनेक ॥ ६८ ॥

दच्छिण की जेष्ठा कनिष्ठा सवैया ।

दास पिकानि कै दूजी न कोप भले संग सौ-ति के सोइ है प्यारी । देखि करोट सु ऐंचि अतोट जगाये लै ओट गए गिरधारी ॥ पूरन काम कै त्योंही तहांई सो आय कियो फिरि कौतुक भारी । बोलि सु बोल उठाय दुहूं मन रंजि कै गंजिफा खेल बगारी ॥ ६९ ॥

सठ नायक की जेष्ठा कवित्त ।

हौं हूं हुती संग संग अंग अंग रंग रंग भू-

घन बसन आज गोपिन सँभारी री। महल स-
राय में निहारत सबन तन ऊपर अटारी गये
लाल गिरधारी री॥ दास तिहि औसर पठाय
कै सहेली को अकेलिये बुलाई ब्रषभान की कु-
मारी री। लाल मन बूड़िबे को देवसरि सोती
भई सौतिन चुनौटी भई वाकी सेत सारी री॥

सठ की कनिष्ठा सवैया।

नैनन को तरसैये कहाँ लौं कहा लौं हियो
बिरहागि में तैये। एक घरी ना कहूं कल पैये
कहां लगि प्रानन को कलपैये॥ आवै यहै अब
दास बिचार सखी चलि सौतिहु के ग्रह जैये।
मान घटे ते कहा घटिहै जु पै प्रानपियारे को
देखन पैये॥ ७१॥

धृष्ठ की जेष्ठा यथा।

छोड़ि सबै अभिलाख भरोसो वै कैसो करैं
किन साँझ सबेरे। पाइ सोहागिन को तनु
छाड़ि कै भूलि कै मेरे सु आवहै मेरे॥ दीने
दई कै लहै सुख-जोग न दास प्रयोग किये बहु

तेरे। कोटि करै नहिं पाइबे को अब तो सखि लाल गरे पस्यो मेरे ॥ ७२ ॥

धृष्ट की कनिष्ठा यथा

ऊधो जू मानें तिहारी कही हम सीखें सोई जोई श्याम सिखावें। जातें उनै सुधि जोग की आई दया कै वहै हमहूं को पठावें ॥ कूबरी कांख जो दाबे फिरैं हमहूं तिनकी समता कहूँ पावें। पाठ करैं सब जोगही को जु पै काठहु की कुबरी कहूं पावें ॥ ७३ ॥

ऊढ़ा अनूढ़ा लक्षण दोहा।

ऊढ़ अनूढ़ा नारि है ऊढ़ा व्याही जानि।
बिना व्याह सो धर्मरत ताहि अनूढ़ा मानि ॥

यथा सवैया।

श्री निमि के कुलदासहू को न निमेष कुपंथनि ह्वै समुहाती। तापर मो मति मेरो सुभाव बिचारि यहै निहँचै ठहराती ॥ दास जू भावी स्वयंवर मेरे को बीसबिसै इनकी रँग राती। नातरु सांवरो मूरति राम की मो अंखियान में क्यों गड़िजाती ॥ ७५ ॥

इति स्वकीया।

अथ परकीया दोहा ।

दुरै दुरै परपुरुष तें प्रेम करै परकीय ।
प्रगल्भता पुनि धीरता भूषन है रमनीय ॥७६॥

यथा सवैया ।

आलिन आगे न बात कढ़ै न बढ़ै उठि ओठनि ते मुसुकानि है । रोस सुभाय कटाच्छ के घायन पाय को आहट जात ना जानि है ॥ दास न कोऊ कहूं कबहूं कहै कान्ह तें याते कछू पहिचान है । देखि परै दुनियाई में दूजी न तोसी तिया चतुराई की खानि है ॥ ७७ ॥

प्रगल्भता लक्षण दोहा ।

निधरक प्रेम प्रगल्भता जौलौं जानि न जाइ ।
जानि गए धीरत्व है बोलै लाज बिहाइ ॥७८॥

यथा सवैया ।

लखि पौर में दास जू प्यारो खरो तिय रोम पसीननि च्वै चलती । मिसकै गृहलोगन सो सुघरी सुघरीही घरी ढिग ह्वै चलती ॥ जग नैन बचाय मिलाय कै नैननि नेह के बीजन ब्वै च-

लती । अपनो तनछांह सों तुंगतनी तनु छैल छबीले को छ्वै चलती ॥ ७९ ॥

धीरत्व यथा सवैया ।

वा अधरा अनुरागी हिये जिय पागो वहै मुसक्यानि सुचाली । नैनन सूझि परै वहै सूरति बैनन बूझि परै वहै आली ॥ लोग कलंक लगावत लाख लुगाई कियो करैं कोटि कुचाली । क्यों अपवाद वृथाही सहै री गहै न भुजा भरि क्यों बनमाली ॥ ८० ॥

ऊढ़ा अनूढा लक्षन दोहा ।

होति अनूढ़ा परकिया बिन व्याहि परलीन ।
प्रेम अनत व्याही अनत ऊढ़ा तरुनि प्रबीन ॥

अनूढ़ा यथा सवैया ।

जानति हौं बिधि मीच लिखी हरि वाकी तिहारे बिछोह के बानन । जो मिलि देइ दिलासो मिलाप को तौ कछु वावै परै कल प्रानन ॥ दास जू जाहि घरी तें सुनी निज व्याह उछाह की चाह की कानन । वाही घरी ते न

धीर धस्यो परै पीरो ह्वै आवो पियारी को आ-
नन ॥ ८२ ॥

अढ़ा यथा सवैया ।

इहि आननचंद मयूखन सों अँखियान की
भूख बुझैबो करौ। तन स्याम सरोरुह दास सदा
सुखदानि भुजानि भरैबो करौ ॥ डर दास न
सास जेठानिन को किन गांव चवाव चलैबो
करौ। मनमोहन जौ तुम एक घरी इन भांतिन
सो मिलि जैबो करौ॥ ८३ ॥

उद्बुद्धा लक्षन दोहा ।

उद्बुद्धा उद्बोधिता द्वै परकिया बिसेखि ।
निज रीझै सुपुरुष निरखि उद्बुद्धा सो लेखि ॥
अनूढ़ानि को चित्त जो निवसै निह्चल प्रीति।
तौ स्वकियन की गति लहै सकुंतला को रीति॥
प्रथम होइ अनुरागिनी प्रेम असक्ता फेरि ।
उद्बुद्धा तेहि कहत हैं परम प्रेम रस घेरि ॥८४॥

अनुरागिनी यथा सवैया ।

पाय परों जगरानी भवानी तिहारी सुनी

महिमा बहुतेरी। कीजै प्रसाद परै जिहि कैसहूं नंदकुमार तें भाँवरी मेरी ॥ है यह दास बड़ो अभिलाष पुरै न सकौं तो कहौं इकबेरी। चेरी करो तो करो न करो मुहि नंदकुमार कि चेरी की चेरी ।८७॥

धीरत्व यथा सवैया।

होइ उज्यारो गँवारो न होइ जु प्यारो लगै तुम ताहि निहारो। दीने न नैन तिहारे से मेरहू कीजे कहा करता सों न चारो॥ आय कही तुम कान में बात न कौनहु काम को कान्हर कारो। मोहि तो वा मुख देखे बिना रविहूं को प्रकास लगै अँधियारो॥ ८८॥

प्रेमासक्ता यथा सवैया।

दास जू लोचन पोच हमारे न सोच सकोच बिधाननि चाहैं। कूर कहै कुलटा कहै कोऊ न कैहूं कहूं कुलसाननि चाहैं॥ तातें सनेह में बूड़ि रहीं इतनेही में जानौ जो जानन चाहैं। आनन दै कहैं आइ गोपाल को आनन चाहिबो आन न चाहैं॥ ८९॥

ऊढ़ा यथा कवित्त ।

सेगी तू बड़ारिनि बड़ीयै हितकारिनि हौं कैसे कहौं मेरे कहे मोहन पै जावै तू । नैन की लगनि दिन रैन की दगनि यह प्रेम को पगनि चितलगनि सुनावै तू ॥ यहऊ ढिठाई जो कहौं कि मोहि लै चलु री कान्हही को दास मेरे भौन लगि ल्यावै तू ॥ यथोचित देखि चित देखि द्रुत देखि चित देहि तित आली जित मेरो हित पावै तू ॥ ९० ॥

उद्‌बोधिता लच्छन दोहा ।

जा छवि लखि नायक कोऊ लावै दूतीघात ।
उद्‌बोधिता सो परकिया वह असाध्य कहि जात॥

भेद ।

प्रथम असाध्या सी रहै दुखसाध्या पुनि होय ।
साध्य भए पर आपही उद्‌बोधिता सु होय ॥

असाध्या अनूढा यथा कवित्त ।

भौन तें कढ़त भाभी भौंड़ी भौंड़ी बातैं कहै लौंड़ी हू कनौड़ी कोड़े द्योढ़ीही के जात

लौं। चौकी बँधी भीतर लोगाइन की जाम जाम बाहिर अथाइन उठति अधरात लौं॥ दास घैरु बसी घैरुहाइन को डर हियो चलदल पात लौं है तोसौं बतलात लौं। मिलन उपाइन को ढूढ़िबो कहा है आली हौं तो तजि दीनो हरि दरसन घात लौं॥ ९३॥

असाध्या जढ़ा यथा।

देवर की त्रासन कलेवर कँपत है न सासु डर आसिनि उसास लै सकति हौं। बाहिर के घर के परोस नरनारिन के नैनन में कांटे सी सदाही कसकति हौं॥ दास नहि जानो हौं बिगारो कहा सबही को याही पीर बीर नित पेट पकरति हौं॥ मोहि मनमोहन मिलाय दूत देती तुम मैं तो वह ओर अवलोकति जकति हौं॥ ९४॥

दुख साध्या लक्षन दोहा।

साध्यकरै पिय दूतिका बिबिध भांति समुझाइ।
दुख साध्या ताको कहैं परकीयन में पाइ॥

यथा कबित्त ।

भूख प्यास भागी बिदा माँगी लोकचास मुख तेरी जक लागी अंग सीरेक कुवै जरै । दास जिहि लागि कोऊ एतो तलफत वा कसाइन सो कैसि दई धीरज धरो परै ॥ जीतो जो चहै तो बेग रीतौ घरौ लै चलु नहीं तो सही तो सिर अजस वै परै मरै । तू तौ घरबसी घर आई घरो भरि हरि घाटही में तेरे नैन घायन घरी भरै ॥ ८६ ॥

अब तौ बिहारी के वे बानक गये री तेरी तनदुति केसरि को नैन कसमीर भो । स्रोन तुव बानीस्वातिबुंदनि को चातिक भो स्वासनि को भरिबो दुप्रदजा को चीर भो ॥ हिय को हरख मरु-धरनि को नीर भो री जियरो मदन तीरगन को तुनीर भो। एरी बेगि करिकै मिलाप थिर थाप न तो आप अब चाहत अतन को सरीर भो ॥ ८७ ॥

उद्बोधिता साध्या – सवैया ।

नायक हौ सब लायक हौ जु करौ सो सबै तुमकौं पचि जाहीं । दास हमै तो उसास लियै उपहांस करैं सब या ब्रज माहीं ॥ आय परैगी कहूं ते कोऊ तिय गैल में छैल गहौ जिन बाहीं । हैहौ दिना की तिहारो है चाह गई करि जाहु निबाहिहौ नाहीं ॥ ९८ ॥

परकीया भेद लक्षण—दोहा ।

परकीया के भेद पुनि चारि बिचारो जांहिँ ।
होत बिदग्धा लच्छिता मुदिता अनुसयनाहि ॥

बिदग्धा लच्छन दोहा ।

द्विविध बिदग्धा कहत हैं कौनै कविन विवेक ।
बचनबिदग्धा एक है क्रियाविदग्धा एक ॥ १०० ॥

बचनबिदग्धा यथा सवैया ।

नीर के कारण आई अकेलियै भीर परै सँग कौन को लीजै । छांऊँ न कोउ गयो द्विव-सोऊ अकेलि उठाये घरो पट भीजै ॥ दास इतै गउआन को ल्याय भलो जल छांहँ को प्याइ-

ये पीजै। एतौ निहोरो हमारो हरी घट ऊपर नेकु घरो धरि दीजै ॥ १०१ ॥

क्रयाविदगधा यथा सवैया।

कसिबे मिस नीबिन के छिन तो अँग अंगनि दास दिखाय रही। अपनेही भुजान उरोजन को गहि जानु सो जानु मिलाय रही ॥ ललचौहैं हँसौंहैं लजौंहैं चितै हित सों चित चाय बढ़ाय रही। कनखा करिकै पग सों परिकै पुनि सूने निकेत मे जाय रही ॥ १०२ ॥

गुप्ता लच्छन दोहा

जब तिय सुरति छपावही करि बिदगधता बाम।
भूत भविष्य ब्रतमान सो गुप्ता ताको नाम ॥

भूत गुप्ता यथा सवैया।

पठावत धेनु दुहावन मोहि न जाहुं तो देखि करो तुम तेहु। छुड़ाय गयो बछरा यह बैरि मरू करि हौं गहि ल्याई हौं गेहु ॥ गई थकि दौरत दौरत दास बरोट लगे भई बिह्वल देहु। चुरी भई चूरि भरी भई धूरि परी ढुरि मुक्त हरो यह लेहु ॥ १०४ ॥

भविष्य गुप्ता सवैया।

दैहौं सखीं सिर तो कहि भाभी पै ऊख की खेत न देखन जैहौं। जैहौं तो जीव डरावन देखिहौं बीचहि खेत के जाय छपैहौं॥ पैहौं छरोर जो पातन को फटिहैं पट क्यौंहू तो हौं न डरैहौं। रैहौं न मौन जो गेह के रोस करैंगे सुदोस मैं तेरोई दैहौं॥ १०५॥

वर्तमान गुप्ता सवैया।

अबही की है बात हौं न्हात हुती अचका गहिरे पग जात भयो। मोहि ग्राह अथाह को लैही चल्यो मनमोहन दूरिहि तें चितयो॥ द्रुत दौरि कै पौरि के दास बरोरि कै छोरि कै मोहि बचाय लयो। इन्हैं भेटती भेटिहौं तोहिँ अली भयो आज तो मो अवतार नयो॥ १०६॥

लक्षिता लच्छन दोहा।

लच्छितासु जाकी सुरति हित प्रगट ह्वै जात।
सखी व्यंग्य बोलै कहै निज धीरज धरिबात॥

सुरति लच्छन यथा सवैया।

सावक बैनी भुजंगन के कुच के चहुं पासन

है खुलि नाचै। ओठ पकै कुंदरू सुक नाक पै काहे न देखिये चोट सो बांचै ॥ आज अली मुकुराभ कपोलनि कैसो भयो मुरचो जिहि माचै। है यह चंद उरोजन दास जू कौन किये ससिसेखर सांचै ॥ १०८ ॥

हेतु लक्षन यथा सवैया।

नैन नचौहैं हसौंहैं कपोल अनंद सों अंग न अंग अमात है। दास जू सेदन-सोभ जगी पुरै प्रेम पगी सो ठगो ठहरात है ॥ मोहिं भुलावै अटारी चढ़ी कहि कारीघटा बकपांति सोहात है। कारी घटा बकपांति सखी यहि भांति भए कहि कौन को गात है ॥ १०९ ॥

धोरत्व यथा सवैया।

सब सूझै जो तोहि तौ बूझै कहा बिन काजहि पीछे रही परि है। जिहि काम को कैवर कारो लगै सो दुचारि को दासजू क्यों डरिहै ॥ हरिबेनी गुही हरि एड़ो कुही नखदंत को दाग दियो हरि है। कहती किन जाय जहां कहिवे कोउ कोह कै मेरो कहा करिहै ॥ ११० ॥

मुदिता लक्षण दोहा।

यहै बात बनि आवई जो चितचाहत होइ।
तातें आनन्दित महा मुदिता कहिये सोइ॥

यथा सवैया।

भोरही आनि जनी सो निहोरि कै राधे कह्यो मोहिं माधो मिलावै। ता हित कारने भौन गई वह आप कछू करिबे को उपावै॥ दास तहीं चलि माधो गये दुख राधेबियोग को ताहि सुनावै। पाय कै सूनो निलै मिले दूनो बढ्यो सुख दूनो दुहूं उर लावैं॥ ११२॥

अनुसयना लक्षण दोहा।

केलिस्थानबिनासिता भावस्थान-अभाव।
अरु संकेतनिप्राप्यता अनुसयना त्रै नाव॥

केलिस्थानबिनासिता यथा—सवैया।

दास जू वाकी तो हार की सूनो कुटी जरै यातें करै दुख थोरै। भारी दुखारी अटारी चढ़ी यहै रोवै हनै छतिया सिर फोरै॥ हाइ भरै कहै लोगन देखि अरै निरदै कोऊ पानी लै दौरै। आग लगी लखि मालिनी कै लगी आग है ग्वालिन के उर औरै॥ ११४॥

भावख्यान अभाव यथा।

आजलौं तौ उत दूसरो प्रानी कोऊ ना हुतो वह बावरो बौनो। आवति जाति अवार सवार बिहार समै न हुतो डर कौनो॥ दास बनै अब क्यों पिय भेंट सहेट के जोग न दूसरो भौनो। बैठि बिचारि यों बाल मनैमन बावन को सुनि आवन गौनो॥ ११५॥

संकेत निःप्राप्यता यथा।

समीप निकुंजन कुंजबिहारी गये लखि साँझ पगे रसरंग। इतै बहु द्योस में आय कै धाय नवेली को बैठि लगाइ उछंग॥ उड़ीं तहँ दास बसी चिरियां उड़िगो तिय के चित वाही के संग। बिछोह तें बुन्द गिरे अँसुआ के सु वाके गुने गए प्रेम उमंग॥ ११६॥

बिभेद लच्छन – दोहा।

मुदिता अनुसयनाहु में बिदग्धाहु मिलि जाय।
सबल भाव इहि भाँति बहु बरनत हैं कबिराय॥

मुदिता बिदग्धा यथा – सवैया।

आवत सोमवती सब संगही गंगनहान

कियो चहती हैं। गेह को भार जसोमति बार को आजहि सौंपि दियो चहती हैं॥ मोहिं अकेली यहां तजि दास जू जीवन लाहु लियो चहती हैं। आली कहा कहौं या घर की सिगरी मोहिँ खाय जियो चहती हैं॥ ११८॥

अनुशयना विदग्धा यथा।

चारि चुरैल बसैं यहि भौन कियो तिन चेरो सो चौधरी दानो। केते बिदेसी बसाय बमाय तिनै सनमानत से कुल ध्यानो॥ दास दयाल जो होती कोऊ तौ भगावती याहि सिखाय सयानो। हाय फस्यो केहि हेत कहां तें धौं आय बस्यो यह बावरो बानो॥ ११९॥

दूजी अनुशयना विदग्धा यथा—कवित्त।

न्यारे* के सदन तें उड़ाई गुड़ी प्रानप्यारे संज्ञा जानि प्यारो मन उठी अकुलाय कै। पावति न घात जात देख्यो सुखव्यात बीतो रीतो कियो घरो तब नीर ढरकाय कै॥ घर की रि-

* न्यारे अर्थात् कूंआवाले घर से।

सानी कहा कीनी तू अयानी तब तासों कै स-
यानी या कहत अनखाय कै। काहे को कुबा-
तनि सुनावति हौ मेरो बीर ढरिगो तो हौंहौ
भरि ल्यावति हौं जाय कै॥ १२०॥

इति परकीया।

अथ मुग्धादि भेद – दोहा।

त्रिबिधि जु बरनी नायिका तेऊ त्रिबिधि बिसेखि।
मुग्धा मध्या कहत पुनि प्रौढ़ा ग्रन्थन देखि॥
जोबन के आगमन तें पूरनता लों मित्त।
पञ्चभेद ह्वै जात हैं त्रै मुग्धादिक चित्त॥१२२॥

मुग्धादि लक्षण।

सैसव जोबन सन्धि जिहि सो मुग्धा अवदात।
बिन जाने अज्ञात है जाने जानो ज्ञात॥१२३॥

साधारण मुग्धा यथा – सवैया।

बालकता मे युवा झलकी दल बोझल ज्यों
जुगुनू के उजेरे। लङ्क लचोहैं नितम्ब उचोहैं
नचोहैं से लोचन दास निबेरे॥ जानिबे जोग

सुजानन के उर आत भली उरजातन घेरे।
स्यामता बीच है चक्र के रङ्ग चनङ्ग सुढार प्रकार सो फेरे ॥ १२४ ॥

स्वकीया मुग्धा यथा—कवित्त।

घटती हुकङ्ग होन लागी लङ्क बासर की कैम सम बंस को मनोरथ फलीन भो। बढ़ि चले कानन लौं नौके नैन खंजन औ बैठि रहिबे को जनु सैसव चलीन भो॥ साँझ तरुनापन विकास निरखत दास आनँद लला के नैनकैरव कलीन भो। दुलही बदनइन्दु उलही अनूप दुति सौति मुख-अरबिन्द अतिही मलीन भो ॥ १२५ ॥

परकीया मुग्धा—यथा सवैया।

उकसौहैं भए उर मध्य कटोहैं सी चंचलता अँखियान लगी। अंखिया बढ़ि कान लगी अरु कानन कान्ह कहानी सोहान लगीं॥ बिन काजहू काज हू दास लखो जसुदा गृह आवन आन लगी। ललिताहु सों नेक बतान लगी रसबात सुने सकुचान लगी ॥ १२६ ॥

अज्ञात यौवना साधारण - यथा सवैया ।

मुहिं सोच बिजोदर रेख लखे उर में अथा बैष सो होन चहै। गति भारी भई बिधि कौवो काहा कसि बाँधतहूं कटि-नीबी ढहै ॥ कहा भौंहनि भाव दिखावै भटू कहिबे कछू होय सो खोलि कहै । पट मेरो चलै बिचलै तो चली तू कहा रद आँगुरी दाबि कहै ॥ १२७ ॥

अज्ञातयौवना स्वकीया ।

सखि तैंहूं हुती निसि देखतही जिन पै वै भई हौं निछावरियां । तिन पानि गह्यो हुतो मेरो तबै सब गाय उठीं ब्रज गाँवरियां ॥ अँसुवा भरि आवत मेरे अजौं सुमिरे उनका पग पाँवरियां। कहि को हैं हमारे वे कौन लगें जिनके सँग खेलीहौं भाँवरियां ॥ १२८ ॥

परकीया अज्ञातयौवना ।

द्वार गई तहँ मेह मिल्यो हरि कामरी ओढ़े हुत्यो उत बैसो। आतुर आइ कै अंग छपाइ ब-चाइ कै मोहिं गयो जस लै सो ॥ दास न ऐसो

लख्यो कबहूं मैं अचभ्भो भयो वहि औसर जैसो। सेद बढ़्यो त्यों लग्यो तन कंपन रोम उठ्यो यह कारन कैसो ॥ १२९ ॥

ज्ञातयौबना यथा ।

आनन में मुसकानि सोहावनी बङ्कुरता अँखियान छई है। बैन खिले मुकुले उरजात जकी बिथकी गति ठौन ठई है ॥ दास प्रभा उछलै सब अंग सुरंग सुबासता फैल गई है। चन्दमुखी तन पाय नवीनो भई तरुनाई अनँदमई है ॥

ज्ञातयौबना स्वकीया ।

दास बड़े कुल की बतियां बतियां परबीनी सो जीवन ज्वैहै । बाहिर ह्वैहै न जाहिर और अनाहिर लोग की छाँह न छ्वैहै॥खेलन दै भरि साध सखी पुनि खेलिबे जोग येई दिन द्वैहै। फेर तो बालपनो अपनो री हमे लषनो सपनो सम ह्वैहै ॥ १३१ ॥

ज्ञातयौबना परकीया—कवित्त ।

मन्द मन्द गौन सो गयन्दगति खोवे लगी

बोने लगी बिष सों अलक अहिछोनी सी। लंक नवला की कुच भारन दुनौने लगी होने लगी तन की चटक चारु सोने सी ॥ तिरछे चितौने सो बिनोदनि बितौने लगी लगी मृदु बातनि सुधारस निचौने सी। मौने मौने सुन्दर सलोने पद दास लोने मुख की चटक ह्वै लगन लगी टोने सी ॥ १३५ ॥

मध्या लक्षण - दोहा।

नवजोबन पूरनवती लाज मनोज समान ।
तासो मध्या नायिका बरनत सुकवि सुजान ॥

साधारण मध्या यथा – सवैया ।

है कुचभारनि मन्दगती करै माते गयन्दन को मद भूरो । आननओप अनूप लखि मिटि जात मयङ्क-गुमान समूरो ॥ दास भरी नख तें सिख लाज पै काम को साज बिलोकिये पूरो। काम के रंग मनो रँगि अंग दई दयो लाज को रोगन रूरो ॥ १३४ ॥

स्वकीया मध्या।

नाह के नेह रँगी दुलही दृग नेहर गेह सकोचनि साने। दास जू भीतरही रहै लाल तऊ लखिबे को रहैं ललचाने॥ प्यो-मुख सामुहैं राखिबे को सखियां अँखियान को ब्योंत बिताने। चन्द निहारि नहीं बिकसै अरबिन्दन को कछु बात न माने॥ १३५॥

परकीया मध्या—कवित्त।

पीन भये उरज निपट कटि छीन भई लीन ह्वै सिंगार सब सीखी सखियान में। दास तनदीपति प्रदीप के उजास कीन्हे बैरिन की नजरि प्रकास पखियान में॥ काम की कलोलन की चरचा सुनत फिरै चन्द्रावलि ललिता की लीन्हे कखियान में। एक ब्रजराज को बदन द्विजराज देखिबे को दून लाज लाजभरी अँखियान में॥

प्रौढ़ा साधारण यथा—कवित्त।

सारी जरकस वारी घाँघरो घनेरो बेस छहरै छबीली केस छोर लौं छवान के। पृथुल नि-

तम्ब लङ्क नाम अवलम्ब लौट गेंदुरी पै कुच है कलस कल साम के॥ दास सुखकन्द चन्दबदनी कमलनैनी गति ये गयन्द होनवारे कुरबान के। पी को प्रेममूरति सुरति कैसी सूरति सुबास हाम पूरनि अवास बनितान के॥१३८॥

प्रौढ़ा स्वकीया यथा—सवैया।

केसरिया निज सारी रँगै लखि केसरि-खौरि गोपाल के गातनि। दास चितै चित कुञ्जबिहारी बिछावति सेज नये तरु-पातनि॥ आवत जानि कै आपने भौन मिलै पहिलै लै बिरी अवदातनि। बीतै बिचारते भावती को दिन भावतो की मनभावति बातनि॥ १३९॥

प्रौढ़ा परकीया यथा।

झूलनि लागी लता मृदु झाइनि फूलनि लागी गुलाबकली अब। दास सुबास झकोरन झोरत भौंर की बाय बहाय चली अब॥ जागि कै लोग बिलोकिहै टोकिहै रोकिहै राह सहार गली अब। ऐसि में सूने सखी कै निलै चलि सोवो सभाग न बाग भलो अब॥ १४०॥

मुग्धादि को संयोग – दोहा ।

अब कहियत तिन तियन के रति संजोग प्रकार ।
होत चेष्टा बचन तें प्रगट जु भाव अपार॥१४१॥
मुग्धा तिय संयोग में कही नवोढ़ा जाहि ।
अविश्रब्ध विश्रब्ध है जो न पतिहि पतियाहि ॥

अविश्रब्धनवोढ़ा – कवित्त ।

सोवती अकेली है नवेली केलिमन्दिर ज-गाय कै महेली रस फैली लखै टरि कै । दास त्यौंही आय हरि लीन्ही अङ्क भरि न सँभारि सकी जागी जऊ सुन्दरि भभरि कै॥ मचलि म-चलि चल बिचल सिँगारन कै कसमसै एजी एजी नाहीं नाहीं करिकै । तकै तन भारै भभकारै कारै छूटिबे को उर थरहरै जिमि एनी जाल परि कै ॥ १४२ ॥

विश्रब्धनवोढ़ा ।

केलि पहिलीयै दुखतूल दूजी सुखमूल ऐसी सुनि आलिन सो आई मति ढंग में। बसन ल-पेटि तन गाढ़ी कै तनीनि तनि सोन-चिरिया

सी बनी सोई पिय संग में॥ तापर पकरि नीबी अंचल अकरि बड़े ढाढ़सनि करि दास आवति उछंग मै। छ्वै छ्वै अधरामृत निहाल होत लाल अबै आनँद बिसाल पाइबो है रतिरंग मै॥ १४४॥

पुनः यथा—सवैया।

हौं तो कह्यो कछु बातें करैगो प्रवीन बड़े बलदेव के भैया। ये गुन जानती तो यह सेजहि भूलि न सोवती बीर दोहैया॥ दास इते पर फेरि बोलावत यों अब आवति मेरी बलैया। आवती हौं जो कहो करि सौंहें कि आज करैंगे न काल्हि की नैया॥ १४५॥

मुग्धा को सुरति।

काम कहै करि केलि ढिठाई सों लाज कहै यह क्योंहूं न होनो। लाज की ओर तें लोचन ऐंचत काम की ओर तें प्रेम सलोनो॥ दास बस्यो मन बाम के काम पै लाज तज्यो निज धर्म न कोनो। यों गृहकाम कह्यो करै प्यारी पै लाज औ काम लरी करैं टोनो॥ १४६॥

झाँझरिया झनकैंगीं खरी खनकैंगीं चुरी तनकौ तन तोरे। दास जू जागतीं पास अली-गन हांस करैंगीं सबै उठि भोरे॥ सौंह तिहारी हौं भागि न जाँउगी आई हौं लाल तिहारेई धोरे। केलि की रैन परी है घरीक गई करि जाहु दई के निहोरे॥ १४७॥

प्रौढ़ा सुरति सवैया।

दास जू रास कै ग्वालि गईं सब राधिका सोइ रही रँग भू मैं। गाढ़े उरोजन दै उर बीच सुजानु को ऐंचि भुजान दुहू मैं॥ भोर भयो पिय सैन को सोनो न गेह को गौनो सकै करि दूमैं। भौर बड़ीये परे जिमि सोनो बनै न भँजावत राखत सूमैं॥ १४८॥

पुन: सवैया।

दीपकजोति मलीनी भई मनिभूषन जोति की आतुरिया है। दास न कोल-कली बिकसी निज मेरी गई मिलि आँगुरिया है॥ सोरी लगै मुकतावलि तेज कपूर की धूरिन सो पुरिया

है। पीढ़े रहो पट ओढ़े इतौ निसि बोलि नहीं चिरिया चुरियाँ है ॥ १४९ ॥

इति बहि:क्रम भेद ।

अथ अवस्था भेद दोहा ।

हेत सँजोग बियोग की अष्ट नायका लेखि ।
तिनके भेद अनेक मैं कछु कछु कहौं बिसेखि ॥

संयोग शृगार की नायका भेद ।

तियसँजोग शृङ्गार की कारन तीनो जानि ।
स्वाधिनपतिका अपर है वासकसज्जा मानि ॥
अभिसारिका अनेक पुनि बरनत हैं कबिराव ।
स्वकिया परकीयान मिलि होत अनेकन भाव ॥

स्वाधीनपतिका लच्छन दोहा ।

स्वाधिनपतिका है वहै जाके बस है पीउ ।
होय गर्बिता रूप गुन प्रेम गर्ब लहि जीउ ॥

स्वकीया स्वाधीनपतिका सवैया ।

मैंाग सवारत काँगहि लै कचभार भिँगावत अंग समेत ही । रोम उठावत कुंकुम लेय कै दास मिलाय मनो लिये रेत ही ॥ बीरो